

Lahari-Bhitya NaukA Vai

——
लहरी-भीत्या नौका वै

——
Document Information



Text title : Lahari-Bhitya Nauka Vai Sanskrit translation of Hindi song laharoM se
Darakara naukA

File name : laharIbhItyAnaukA.itx

Category : misc, sanskritgeet, hkmeher

Location : doc_z_misc_general

Author : Harekrishna Meher meher.hk at gmail.com

Transliterated by : Harekrishna Meher

Proofread by : Harekrishna Meher

Acknowledge-Permission: Dr. Harekrishna Meher

Latest update : April 12, 2024

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com


This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

April 12, 2024

sanskritdocuments.org



लडरी-भीत्या नौका वै



(“लडरों से डरकर नौका” छिन्दी गीतस्य संस्कृतानुवादः)

लडरी-भीत्या नौका वै गच्छति नो पारम् ।
नायात्युधम-निरतानां कर्मसु विह्वलत्वम् ।
उधम-निरता न लभन्ते स्वपराजय-भारम् ॥ ० ॥

कण्डिकां नीत्वा यलति यदा लघ्वी पिपीलिका,
रोडति भित्तौ स्मलति परं शतवारं सैका ।
मनसो विश्वासो धमनौ पूरयति साडसम्,
रोडे पतनं पतने रोडो जनयति नो षेडम् ।
अन्ते तस्याः श्रम-सर्वं याति नडि व्यर्थम् ।
नायात्युधम-निरतानां कर्मसु विह्वलत्वम् ।
उधम-निरता न लभन्ते स्वपराजय-भारम् ॥ १ ॥

अवगाडी कुरुते नूनं निमज्जनं जलधौ,
प्रत्यायाति य रिक्त-करो मुडुरपि गत्वाऽसौ ।
सरलं न लभ्यते वै मुक्ता सलिले सुगभीरे,
द्विगुणं वर्धत उत्साहो ड्यत्रोद्वेगभरे ।
शून्यागच्छति न तदीया मुष्टिः प्रतिवारम् ।
नायात्युधम-निरतानां कर्मसु विह्वलत्वम् ।
उधम-निरता न लभन्ते स्वपराजय-भारम् ॥ २ ॥

असङ्कलता त्वेकाह्वानं, तत् स्वीकुरु नूनम्,
पश्याभावः को जातः, सम्मार्जयाधिकम् ।
नाप्तं यावत् सङ्कलत्वं, निद्रां त्यज सौष्यम् ।
सङ्घर्षाङ्गणमिड छित्वा न पलायेथास्त्वम् ।
लभ्यः डिञ्चित् कृतं विना, जयकारो नैवम् ।
नायात्युधम-निरतानां कर्मसु विह्वलत्वम् ।

उधम-निरता न लभन्ते स्वपराजय-भारम् ॥ ३ ॥

मूल छिन्दी

लडरों से उरकर नौका पार नहीं होती ।
कोशिश करनेवालों की डार नहीं होती ।
कोशिश करनेवालों की डार नहीं होती ॥ ० ॥

नन्हीं र्थीटी जभ दाना लेकर चलती है,
यढःती दीवारों पर, सौ बार ड़िसलती है ।
मन का विश्वास रगों में साडस भरता है,
यढःकर गिरना गिरकर यढःना न अणरता है ।
आभिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती ।
कोशिश करनेवालों की डार नहीं होती ।
कोशिश करनेवालों की डार नहीं होती ॥ १ ॥

डुभकियाँ सिन्धु में गोताणोर लगाता है,
जा जाकर ખाली डाय लौटकर आता है ।
मिलते नहीं सडज डी मोती गडरे पानी में,
बढःता डुगुना उतसाड षसी डैरानी में ।
मुट्टी उसकी ખाली डर बार नहीं होती ।
कोशिश करनेवालों की डार नहीं होती ।
कोशिश करनेवालों की डार नहीं होती ॥ २ ॥

असडलता अेक युनौती है स्वीकार करो,
ड्या कर्मी रड गयी डेणो, और सुधार करो ।
जभ तक न सडल डो नीँड यैन डो त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोडः मत भागो तुम ।
कुछ डिये बिना डी जय-जयकार नहीं होती ।
कोशिश करनेवालों की डार नहीं होती ।
कोशिश करनेवालों की डार नहीं होती ॥ ३ ॥

लडरों से उरकर नौका (छिन्दी गीत)

मूल-रथयिता - डवि सोडनलाल ड्रिवेडी


संस्कृत-गीतानुवादकः - डो. डरेकृषण-मेडेरः

Laharon Se Darkar Nauka (Hindi song)


Original Lyrics by : Poet Sohanlal Dwivedi

Sanskrit Version Lyrics by : Dr. Harekrishna Meher

Copyright - Dr. Harekrishna Mehera

——
Lahari-Bhitya Nauka Vai

pdf was typeset on April 12, 2024

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

